सातपुते एम. आऱ

हिंदी विभाग

एस.एम.बी.एस.टी महाविद्यालय संगमनेर

प्रथम वर्ष वाणिज्य

पाठ्यपुस्तक का नाम –साहित्य

लेखक–सम्पादक मंडल – हिंदी अध्ययन मंडल,

सावित्रीबाई फुले पुणे विश्वविद्यालय, पुणे

हो गई है पीर पर्वत–सी पिघलनी चाहिए

दुष्यंत कुमार

कवि परिचय – बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार दुष्यंत कुमार जी का जन्म 01 सितंबर 1933 ई. बिजनौर जिले के राजपुर नवादा गॉव में हुआ था। उन्होंने एम.ए. का अध्ययन इलाहाबाद विश्वविद्यालय से पूर्ण किया। पश्चात् आकाशवाणी और तत्कालीन हिंदी पत्रिका 'नए पन्ने' में भी कार्य किया। उनकी अनेक गजले रचनाएँ काफी प्रसिद्ध रही है। दुष्यंत कुमार की गई गजले सरकार की निर्मम व्यवस्था पर प्रहार करती है। इन्होंने ग़जल को सामाजिकता के साथ जोडने का सफल प्रयास किया है। इनका 'साये में धूप' नामक गजल संग्रह चर्चित रहा है। इसमें तकरीबन 52 गज़ले समाहित है। उक्त गज़ल इसी संग्रह से ली गयी है।

‘हो गयी है पीर’ इस गजल के अतिरिक्त उनकी ‘भूख है तो सब्र कर’, ‘मत कहो आकाश में कुहरा घना है’, ‘कही पे धूप’, ‘कैसे मंजर सामने आने लगे है’, आज सड़को पर आदि गज़ले काफी प्रसिद्ध रही है। इनकी गजलों में आम आदमी की पीडा के दर्शन होते हैं। साथ ही आपातकालीन सामाजिक स्थिति का भी आभास मिलता है। दुष्यंत कुमार जी ने अपनी सचनाओं में सहज सरल भाषा का प्रयोग किया है। इनका निधन 30 दिसंबर 1975 ई. को भोपाल में हुआ।

प्रमुख कृतियाँ

काव्य संग्रह – सूर्य का स्वागत, जलते हुए वन का वसंत, आवाजों के घेरे ।

उपन्यास – छोटे छोटे सवाल, आंगन में एक वृक्ष, दुहरी जिंदगी।

काव्य नाटक – एक कंठ विषपायी गज़ल संग्रह – साये में धूप

हो गयी है पीर’ यह गजल शैली में लिखी गई कविता है। यह कविता देश में फौली राजनीतिक एवं सामाजिक कुरीतियों के कारण उत्पन्न भ्रष्टचार, अवसरवाद ईर्ष्या, घ्रुणा, स्वार्थ, शोषण, दरिद्रता, जाति एवं धर्मगत भेदभाव आदि बुराइयों से बदहाल आम आदमी के दु:ख को समझने एवं उसमें में नई क्रांति लाने के उद्देश्य से लिखी गई है। यह प्रगतिवादी विचारधारा से युक्त ग़जल है । गजल के पहले शेर में गजलकार कहते है –

हो गयी है पीर पर्वत–सी पिघलनी चाहिए,

इस हिमालय से कोई गंगा निकलनी चाहिए।

अर्थात् राजनीतिक और सामाजिक कुरीतियों तथा विसंगातियों के कारण आम जनता का हदय की पीड़ा या दु:ख पर्वत के समान हो चुका है। यह पीड़ा रुपी पर्वत जरुर पिघलना चाहिए। ताकि यह दु:ख व्यक्त हो सके और ठ़ोस समाधान की और उन्मुख हो जाए । दुष्यंत कुमार जी ने इस पंक्तियों में हिमालय और गंगा का दुष्टांत देते हुए कहा है कि जिस तरह से हिमालय से गंगा निकलती है और अपने तेज बहाव के साथ आसपास की गंदगी को बहा जे जाती है।

बिलकुल उसी तरह से जनता की दु:खों का क्षमन करने हेतु भारतवर्ष रुपी हिमालय से कोई परिवर्तनकारी गंगा निकलनी चाहिए और उसके बहाव में राजतीतिक एवं सामाजिक व्यवस्था के कारण उत्पन्न गंदगी पूर्ण रुप से की है। कवि ने दु:खों की तुलना हिमालयीन ऊँचे पर्वत से की है। इससे समझा जा सकता है कि जनता में किस भाँति दु:ख एवं पीड़ा भर गई थी। आज भी भारतीय समाज में पीड़ा के दर्शन सर्वत्र होते है । आगे कहते है –

यह दिवार, परदों की तरह हिलने लगी,

शर्त लेकिन थी कि ये बुनियाद हिलनी चाहिए।

अर्थात् समाज में व्याप्त जाति एवं धर्मगत भेदभाव, शोषण, विषमता, ईर्ष्या, द्वेष, दारिद्रय, अन्याय–अत्याचार और दुराव की दीवार परदों की तरह हिलने लगी है। लेकिन वास्तव में इसकी बुनियाद हिलनी चाहिए। अर्थात् इन बुराइयों का समूल उच्चाटन होना चाहिए और समाज में समानता, धर्मनिरपेक्षता, प्रेम, दया, करुणा, आदि मूल्य जागृत हो जाने चाहिए। ग़जल अगली पंक्तियों में ग़जलकार ने कहा है कि

ग़जल अगली पंक्तियों में ग़जलकार ने कहा है कि

हर सड़ाक पर, हर गली में, हर नगर, हर गॉव में,

हाथ लहराते हुए हर लाश चलनी चाहिए।

अर्थात् इस संसार में आम आदमी की पीड़ा पर्वत के समान बन गई है । अनेक दुषप्रवृत्तियों के कारण मनुष्य–मनुष्य के बीच दीवारें बन गई है। इनके बीच की दुरियॉ बढ़ती ही जा रही है। ऐसे में इन दुरियों को समाप्त करने और समाज में पुनः समानता, अपनत्व, भईचारा, प्रस्थापित करने के लिए अथाव समाज का नए सिरे से सुधार करने के लिए हर प्रांत, हर नगर, हर सड़क एवं हर गॉव से हाथ लहराते हुए हर लाश निकलनी चाहिए। यहॉ पर लाश का अर्थ आम आदमी से ग्रहण कर सकते है । हर स्थान के प्रत्येक अंतिम या आम आदमी के द्वारा सुधार का प्रयास हो जाचा चाहिए।

गज़ल की अगली पंक्तियों में दुष्यत कुमार जी ने कहा है–

सिर्फ हंगामा खड़ा करना मेरा मकसद नहीं,

मेरी कोशिश है कि ये सूरत बदलनी चाहिए।

इन पंक्तियों में कवि कहते है कि यदि सही मायने में समाज का सुधार करना है, तो केवल बड़ी–बड़ी बातें करकें या भाषणबाजी करके कान चलने वाले नहीं है। अतः समाज के सच्चे सुधार के लिए लगन्, ईमानदारी एवं सच्चाई केसाथ प्रयास किया जाना चाहिए। कवि का उद्देश्य केवल हंगामा खड़ा कना नहीं है, बल्कि समाज की सूरत को बदलने का सच्चा प्रयास है। कविता की अंतिम पंक्तियों में कवि कहते है कि

कविता की अंतिम पंक्तियों में कवि कहते है कि –

मेरी सीने में नही तो तेरे सीने में सही,

हो कही भी आग, लेकीन आग जलनी चाहिए।

अर्थात समाज सुधार की आग मेरी सीने मे नहीं तो तो तेरी सीने से सही , कही भी परिवर्तन की आग हो, पंरतु वह अवश्य जलनी चाहिए। ताकि भारत वर्ष की सूरत बदल जाए। इस गजल या कविता के माध्यम से कवि यह संदेश देना चाहते है कि आम आदती की पीड़ा पर्वत के समान हो गई हैं । इस पीड़ा को सुख में तब्दील करने के लिए आम आदमी हो या खास सभी के द्वारा निरंतर प्रयास होना चाहिए और पीड़ा का समूल उच्चाट्न होन चाहिए। जब तक पीड़ित , वंचित , शेषित वर्ग का दुःख दूर नहीं होगा , तब तक देश की सही प्रगति संभव नहीं है।

कविता की भाषा सरल है । इसमें कवि ने तत्सम्, तद्भव और विदेशी शब्दों का प्रयोग किया हैं । दीवार, परदा, हंगामा, सूरत, सीना, आदि फारसी भाषा के शब्दों का प्रयोग इस कविता में नजर आता है। कविता की भाषा में एक तरह का लय है, जो पाठकों में ऋचि पैदा करने में सक्षम कहा जा सकता है ।

धन्यवाद